बिखरी कल्पनाओं व बिखरे सच के तालमेल से पैदा होती हैं रचनाएं

नई दिल्ली (एसएनबी)। साहित्य अकादमी की प्रतिष्ठित कार्यक्रम श्रृंखला कथा-संधि के अंतर्गत बृहस्पतिवार को प्रख्यात कथाकार सच्चिदानंद जोशी के कथा पाठ का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम उन्होंने अपनी कहानी 'वन योगिनी' का पाठ किया।

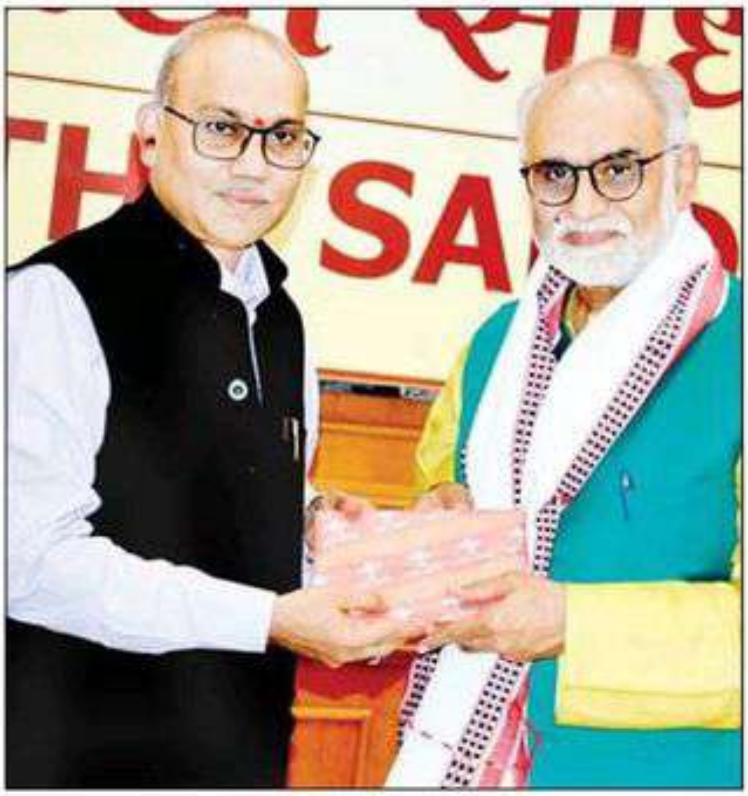

साहित्य अकादमी की ओर से आयोजित प्रतिष्ठित कार्यक्रम 'कथा-संधि' में प्रख्यात कथाकार सच्चिदानंद जोशी को सम्मानित करते अकादमी के सचिव के. श्रीनिवास राव।

कहानी एक ऐसी लड़की पर केंद्रित थी, जिसने आदिवासी परिवार से आने के बाद भी अपनी प्रतिभा के बल पर जिलाधिकारी का पद हासिल किया, लेकिन उसकी इस लक्ष्य तक पहुंचने के पीछे एक साक्षात्कार में बैठे अध्यापक की वह टिप्पणी रही, जिसमें उन्होंने उसके आदिवासी होने और उससे मिलने वाली सुविधाओं पर तंज किया था। कहानी में उसी अध्यापक को वह जिलाधिकारी बनने के बाद अपने कार्यालय में बुलाकर धन्यवाद देती है कि आपके उन्हीं चुभते शब्दों के कारण आज मैं इस पद पर पहुंची हूं। उन्होंने दूसरी कहानी 'ऑल द बेस्ट' शीर्षक से पढ़ी, जिसमें अधिकारी परिवार और उनके गार्ड के आपसी व्यवहार को बारीकियों से उजागर किया गया था।

■ साहित्य अकादमी ने सच्चिदानंद जोशी के साथ किया कथा-संधि कार्यक्रम का आयोजन

कहानी सुनाने से पहले उन्होंने अपनी कथा-यात्रा के बारे में बताते हुए कहा कि वे बड़े सौभाग्यशाली थे कि घर में मां मालती जोशी के रूप में एक बड़ी कथाकार मेरे आस-पास थी। मैंने अपनी पहली रचना जब उनको सुनाई तब उन्हें विश्वास नहीं हुआ कि उसे मैंने लिखा है। मैंने कभी भी उनके नाम का फायदा रचना छपवाने के लिए नहीं उठाया। कार्यक्रम के पश्चात पाठकों के प्रश्नों के उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि हमारी रचनाओं में कुछ बिखरी हुई कल्पनाएं और कुछ बिखरे हुए सच होते हैं। इन्हीं के ताल मेल से एक रचना तैयार होती है। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने उनका स्वागत अंगवस्त्र एवं साहित्य अकादेमी का प्रकाशन भेंट करके किया।